अंतरा-शब्दशक्ति

अहसास के मोती

कहानी संग्रह

प्रिया एस. प्रसाद (प्रियायश)

अहसास के मोती

(कहानी संग्रह)

प्रिया एस. प्रसाद 'प्रियायश'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-62-8

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय- १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- प्रिया एस. प्रसाद 'प्रियायश'

मूल्य- ४०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ahasas Ke Moti By Priya S. Prasad 'priyayash'

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

सरल और सौम्य के साथ थोड़ी सी मनस्विनी अर्थात विद्रोहिणी भी हूँ। विद्रोह कुरीतियों से, विद्रोह अमानवीय कृत्यों से और विद्रोह नारी शोषण से। ज़िन्दगी के करीब हूँ, इसका का हर पल जीती हूँ और कुछ न कुछ सीखती हूँ। जिंदगी ही है जो हमें पूरी आज़ादी देती है। प्रकृति को ईश्वर का स्थान दिया है इसलिए प्रकृति की हर रचना से प्रेम है फिर वो चाहे सजीव हो या निर्जीव।

ज़िंदगी कहानियों से भरी पड़ी है। इसके हर पल में कोई न कोई कथा या कहानी छुपी हुई होती है । ट्रैफिक सिग्नल पर भी कहानी मिल जाती है जब एक बच्ची हाथ फैलाए सामने आती है । विचलित मन सोचने लगता है कि ये यहाँ क्यों और कैसे आई ? उसके पीछे भी कोई न कोई कहानी होगी। मेरी हर कहानी का पात्र कहीं न कहीं असल ज़िंदगी से ही मिला है।

मेरी कहानियाँ सरल शब्दों में हैं क्लिष्ट भाषा का प्रयोग न के बराबर है । आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग अधिक है ताकि पाठक उस कहानी व पात्रों से जुड़ाव महसूस करें जो कि कहानी की सार्थकता के लिए आवश्यक है ।

कहानियों की मुख्य पात्र नारी ही हैं क्योंकि स्वयं नारी हूँ तो उनके अंतर्मन को समझ पाती हूँ। "गोद भराई- माँ की" एक सामाजिक चेतना जगाती है वृद्धों के प्रति तो "इज्ज़त के सिवा सब कुछ में" समाज की दो अलग वर्गों की स्त्रियों की सोच व परिस्थितियाँ दर्शाई गई हैं। "अहसास के मोती" जल्दबाज़ी में लिए फैसले को बयाँ करती है तो "देसी घी के लड्डू" लोगों के दोहरे मापदंड को। प्रत्येक कहानी में स्त्री मन के अहसास हैं जो अक्षरों के मोती के रूप में पिरोए गए हैं ।

मेरे लेखन को प्रोत्साहित करने में मेरे हमसफ़र 'यश' का महत्त्वपूर्ण योगदान है, जिन्होंने हर कदम पर मेरा साथ दिया. मार्गदर्शन किया। इस पुस्तक में कुछ कहानियाँ स्त्री-पुरुष संबंधों पर तो कुछ मानवीय संवेदनाओं पर आधारित हैं जो मेरे विचार को सामने लाते हैं।

प्रिया एस. प्रसाद 'प्रियायश'

अनुक्रमणिका

1. फिर से,...! 5

2. गोद भराई- माँ की 6

3. इज्ज़त के सिवा सब कुछ 7

4. कैद में बुलबुल 9

5. बेटों को बचाओ 11

6. देसी घी का लड्डू 12

7. मोहे गोरा रंग दे दे 13

8. अहसास के मोती 15

फिर से,.....!

घड़ी की सुइयाँ अपनी रफ़्तार दिखा रही थी लेकिन महिमा के काम में तेज़ी नही आ रही थी। वह बहुत उत्सुक थी क्योंकि आज नुपुर अपने पापा के साथ घर आने वाली थी। नुपुर!! उसके बेटे आकाश का प्यार थी। तभी दरवाज़े की घंटी बजी। उसने दरवाज़ा खोला तो सामने उसका बेटा आकाश और नुपुर थे। बहुत प्यारी थी नुपुर, उसने झुककर महिमा के पैर छुए तो महिमा ने भी उसे बाँहों में भरकर गले से लगा लिया।

महिमा पानी लेकर जैसे ही बैठक में आई सामने शेखर थे, नुपुर का पापा। आकाश ने शेखर से कहा, अंकल ये हैं मेरी प्यारी मम्मी 'महिमा अरविंद कुमार'। शेखर ने फ़ोन से नज़रें हटाकर, महिमा की ओर देखकर हाथ जोड़कर, जैसे ही नमस्ते किया, एक पल को दोनों ही जड़वत हो गए। शेखर महिमा के कॉलेज के दिनों का प्यार था जिसके परिवार ने महिमा को उसके 'दलित' होने के कारण अपनी बहू बनाने से इनकार कर दिया था। तभी महिमा के पति अरविंद भी आ गए। नुपुर से मिलकर वे भी बहुत खुश हुए। महिमा ने नुपुर को पूरा घर दिखाया। थोड़ी ही देर में वह महिमा से घुल-मिल गई। जब नुपुर ने बताया कि कुछ साल पहले ही उसकी माँ एक हादसे में गुज़र गईं तो महिमा ने बहुत देर तक उसे गले से लगाए रखा।

खाना खाने के बाद सब आइसक्रीम खा रहे थे। महिमा ने देखा कि शेखर बहुत चुप-चुप है और कुछ असहज भी। महिमा ने आकाश से पूछा "बेटा तुमने नुपुर और शेखर जी बता तो दिया न कि हम किस कास्ट के हैं ?"

आकाश के पहले नुपुर ही बोल पड़ी "जी आंटी जी, मुझे सब पता है और ये भी जानती हूँ कि आकाश ने आगे बढ़ने के लिए कभी भी कोटे का सहारा नहीं लिया, सब कुछ अपनी योग्यता से ही प्राप्त किया। लेकिन तुम्हारे पापा.. ? महिमा ने पूछा

पापा बहुत प्रोग्रेसिव हैं। वे इन दकियानूसी बातों में विश्वास नही करते। क्यों? है न पापा?

नुपुर ने शेखर की ओर देख कर पूछा। शेखर ने महिमा की ओर देखा और आँखें चुराते हुए कहा, हाँ बेटा! ये सब बातें अब पुरानी हो गई हैं।

थोड़ी देर बाद नुपुर और शेखर जाने के लिए उठे। महिमा के पति और बेटा नुपुर के साथ घर के बाहर की ओर बढे।

शेखर ने महिमा की ओर देखा, उनकी आँखों में नमी थी, हाथ जोड़कर बोले "सॉरी"!!!

महिमा ने भी नमस्कार करते हुए गर्व कहा, "थैंक्स इतनी प्यारी बेटी देने के लिए, शेखर जी।"

गोद भराई-माँ की

आज 'वटवृक्ष' वृद्धाश्रम में बहुत चहल-पहल थी। सभी बहुत खुश थे। रसोईघर से स्वादिष्ट भोजन की खुशबू आ रही थी। सभी के चेहरे पर रौनक थी। सभी बड़े हॉल में इकट्ठा थे। थोड़ी देर में शांति देवी वहाँ आईं, सबकी तरफ़ देखा और हल्की सी मुस्कान लिए सबको नमस्कार किया । नरेश जी ने उन्हें एक शाल देते हुए कहा, "शांति जी आपके लिए एक सप्रेम भेंट!!

आपके जाने से यहाँ भी सब शांत हो जाएगा। आपके हाथों के वो बेसन के लड्डू बहुत याद आएँगे।

शांति देवी ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने चार किलो लडडू बनाकर भंडार गृह में रख दिए हैं।

नरेश जी के होठों पर हलकी सी मुस्कान आ गई।

और वो मंगलवार की भजन संध्या का क्या? सामने से आती हुई अल्पना जी बोलीं।

"आप सब तो हैं न, सब कुछ वैसे ही चलेगा जैसा चलता आया है"- शांति देवी बोलीं।

तभी नरेश जी पूछा- वे लोग कब तक आएँगे ? तो अल्पना जी बोलीं- "दोपहर बाद का कहा है"....

नरेश जी धीमे स्वर में केवल 'हम्म्म' ही बोल पाए कि उनकी आँखे नम हो गईं ....

उनके साथ ज्योति जी, अल्पना जी और बाकि लोगों की आँखें भी नम हो गईं।

सब किसी-न-किसी काम का बहाना बनाकर हॉल से चले गए। शांति देवी आराम कुर्सी पर बैठ गईं और सोचने लगीं कि कैसे पति के गुज़रने के बाद उनकी दुनिया जैसे थम सी गई थी। संघर्ष करते हुए बेटे को काबिल बनाया, धूमधाम से शादी की। एक पोता भी था। बहुत खुश थीं कि एक दिन जब बेटा-बहू की बात सुन ली कि "उनका 'बेटा' अब बड़ा हो रहा है, उसे अलग कमरा चाहिए और प्राइवेसी भी जिसमें शांति देवी अडचन हैं".... तब उन्हें अहसास हुआ कि वो एक 'दाई माँ' से ज़्यादा कुछ नहीं... कहाँ तो वह पोते की शादी और उसके बच्चे के सपने देख रही थीं और कहाँ अब उनके सिर की छत ही खिसक रही थी।

एक दिन घूमते-घूमते उनकी नज़र इस वटवृक्ष "वृद्धाश्रम" पर पड़ी। शांति देवी ने सोचा बेटे का "बोझ" कुछ हल्का कर दें और वे यहाँ आ गई जहाँ उनकी तरह और भी वृद्ध थे जो उनकी तरह या तो खुद आए या बेटे द्वारा छोड़े गए थे। शांतिदेवी को यहाँ एक परिवार मिला था।

तभी ज्योति जी आईं और कहा- "शांति वे लोग आ गए.."

सच? आ गए मेरे बच्चे? 'हाँ, शांति'... ज्योति जी बोलीं

अचानक दो कोमल हथेलियों ने शांति जी की पलकों को छुआ .. हाथ हटाया तो देखा, सामने सुनयना और माधवन थे .. "उनका नया परिवार, उनके बच्चे"

माधवन और सुनयना, दोनों के माता-पिता नहीं थे। दोनों की ज़िन्दगी की ये कमी उन्हें पल-पल सताती थी। उनके दो बच्चे थे- एक बेटी और एक बेटा... वे चाहते थे कि उनके बच्चे अपने दादा-दादी और नाना-नानी के रिश्ते को पहचाने.. उनके सानिध्य में बड़े हों

अपनी ज़िन्दगी में माता-पिता की कमी को दूर करने के लिए उन्होंने शांति जी को "गोद लिया" ...

क्योंकि उनका मानना था कि ... **"जिनके बच्चे नही होते वे अनाथ आश्रम से बच्चे गोद ले लेते हैं तो अगर किसी के माता-पिता नहीं हैं तो उन्हें भी वृद्धाश्रम से उन्हें गोद ले लेना चाहिए।"**

इस प्रकार हमारे बुजुर्गों की बाकि की ज़िंदगी वृद्धाश्रम में नही एक परिवार में बीतेगी।

शांति देवी के चेहरे पर आज कई वर्षों बाद सच में शांति आई थी... सही मायनों में ये उनकी फिर से "गोद भराई" थी।

इज्ज़त के सिवा सब कुछ

प्रतिभा जल्दी करो देर हो रही है पार्टी के लिए। प्रतिभा का पति आयुष चिल्लाते हुए बोला।

"हाँ बस!! "थोड़ी देर और" प्रतिभा ने कहा ..

तभी उसकी कामवाली बाई रमा की आवाज़ आई- "दीदी कहीं बाहर जा रही हो?"

हाँ,.. तुम जल्दी काम खत्म कर लो हमें निकलना है... प्रतिभा ने कहा!

"कब तक लौटोगी दीदी?" रमा ने उदास होकर पूछा।

'आने में देर रात तो हो ही जाएगी' .. "क्यों कुछ काम है?" प्रतिभा ने पूछा हाँ दीदी!!! असल में मुझे कुछ पैसे चाहिए थे।" रमा सकुचाते हुए बोली ।

अरे!! अभी दो दिन पहले ही तो तुम्हारी सैलरी दी है । सब खत्म हो गए? तुम लोग भी न!! पैसे आए नहीं कि उड़ाना शुरू, बचत करना तो जैसे जानते ही नही । प्रतिभा बिना रुके बोलती जा रही थी।

नही दीदी!! ऐसी बात नही है, वो क्या है न कि मेरी बेटी 'शांता' ससुराल छोड़कर मेरे घर आ गई है क्योंकि उसका पति उसके साथ रोज़ ज़बरदस्ती और मार-पिटाई करता है। अब शांता मेरे साथ ही रहेगी। ओह्ह!!! प्रतिभा के मुँह से निकला ।

प्रतिभा सोचने लगी कि अक्सर शराब के नशे में आयुष भी तो उसके साथ जबरदस्ती करता है ।

कितना दर्द होता है उसे । मना करो तो हाथ भी उठा देता है । तभी उसके अंदर से आवाज़ आई- "तो क्या हुआ ? प्यार भी तो कितना करता है। हर ज़रूरत का ख्याल रखता है और सबसे बड़ी बात, उसके साजो-श्रृंगार, महँगे कपड़े और ज़ेवर पर कितना खर्च करता है!! इतने ऐशो-आराम के लिए थोडा बहुत समझौता तो करना ही पड़ता है।"

उसने रमा से कहा- अरे! पागल है ? खुद का बोझ तो उठाया नही जाता उसपर शादीशुदा बेटी को भी रख लिया। मेरी बात मान और सुलह करने को बोल शांता को। जैसा भी है आखिर पति है उसका .. थोडा बहुत ऊँच-नीच तो होती रहती है। हम हाई सोसाइटी में भी होता रहता है ये सब, तो क्या पति का घर छोड़े दें ? तू भी न ...

लेकिन दीदी उसका पति अब इतना नीचे गिर गया कि अपनी अय्याशी के लिए उसे अपने दोस्तों के साथ भी सोने के लिए बोलता है। "हम आप लोगो की तरह बड़े लोग नही है। आप लोगो के पास पैसा, रुतबा सब कुछ है। दीदी, हमारे पास बस इज़्ज़त है।" बोलते हुए कमरे से बाहर निकल गई। प्रतिभा चुप खड़ी रही।

थोड़ी देर बाद रमा को कुछ रुपये देकर वह आयुष के साथ पार्टी के लिए निकल गई। आयुष ने उसे अपने उन सभी क्लाइंट से मिलवाया जिनसे डील हो चुकी थी या होने की संभावना थी। प्रतिभा को ड्रिंक के गिलास के साथ बनावटी हँसी के साथ सबसे मिलना पड़ रहा था लेकिन उसे इन सबकी आदत थी।

पार्टी में सबसे मिलने के बाद आयुष अकेले में प्रतिभा को बाँहों में लेते हुए बोला- यार प्रतिभा!! तुम तो मेरा 'लकी चार्म' हो । तुम्हें साथ लेकर आता हूँ तो आर्डर पर आर्डर मिलते हैं।

प्रतिभा हतप्रभ सी आयुष की बात सुन रही थी। आयुष ने उसका हाथ ज़ोर से पकड़ा और उसे शराब का गिलास पकड़ा कर कहा कि- "जाओ गुप्ता जी के पास, और देखना वे नाराज़ न हों।" एक करोड़ की डील होने है उनके साथ।

इतना कहकर आयुष दूसरे क्लाइंट के पास चला गया।

प्रतिभा हाथ मे ड्रिंक लिए उस आदमी की ओर बढ़ती जा रही थी और उसे रमा की बात याद आ रही थी।

"हम आपकी तरह बड़े लोग नही है । आपके पास पैसा, रुतबा सब कुछ है ।" "दीदी!!! हमारे पास बस इज़्ज़त है"

कैद में बुलबुल

रश्मि ने जैसे ही रोहित के नाम के आगे ऑनलाइन देखा तो ख़ुशी से उसके दिल की धड़कने बढ़ने लगी। उसने जल्दी से 'हेलो' टाइप किया और सेंड कर दिया। सामने से जवाब आया-

'हेलो!! कैसी हो?'

रश्मि ने लिखा- ठीक हूँ ..

थोड़ी देर तक दोनों ओर एक ख़ामोशी छाई रही।

फिर रोहित ने लिखा- तुम्हारी 'डीपी' में जो लड़की मुस्कुरा रही है वह बहुत प्यारी है!

"तुम भी मुस्कुराते हुए ऐसी ही दिखती हो न?"

ये पढ़कर रश्मि का दिल थोडा-सा रो पड़ा। उसने गुड नाईट लिखा और लॉगआउट कर दिया।

बेटे की चाह में तीन बेटियों में वह दूसरे नंबर पर थी। पढ़ने-लिखने में होशियार लेकिन माँ के लिए बोझ। लिखने का शौक बचपन से था तो कागजों पर रो लेती। 'पी एच डी.' करना चाहती थी। पिताजी तो चाहते थे जितना चाहे उतना पढ़े लेकिन माँ को बोझ जल्दी हल्का करना था इसलिए ग्रेजुएशन करते ही शादी करने की ठान ली।

रश्मि ने भी सोचा शायद शादी के बाद खुल कर हँस सकेगी।

लेकिन शादी के दो साल के भीतर ही लगने लगा कि एक कुएँ से निकलकर दूसरे कुएँ में आ गई।

शराबी पति को 'परमेश्वर' न मानने की सज़ा रोज़ मिलती। हर सुबह, रात के प्यार के ज़ख्म शरीर पर लिए दिन शुरू होता होता था उसका। सास-ससुर भी कुछ ज़्यादा अच्छे नहीं थे शायद बेटे के आगे मजबूर थे।

एक दिन उसके सूखे मरुस्थल में बारिश की कुछ बूँदें गिरी जब पति लैपटॉप लेकर आए। पिछले साल जब फेसबुक पर 'आई डी' बनाने की बात की थी तो पति बहुत गुस्सा हुए।
चिल्लाते हुए बोले थे- "फेसबुक पर अच्छी औरतें नहीं जातीं।" वहाँ के आदमी राक्षस होते हैं, औरतों को फँसाते हैं, और न जाने क्या-क्या कहा। काफ़ी मिन्नतें करने के बाद पति ने उसे आई डी बनाने की इजाज़त दे दी लेकिन शर्त यह थी कि वह कभी किसी को अपना चेहरा नहीं दिखाएगी, यानि फोटो नही लगाएगी।

फेसबुक पर आने के बाद रश्मि ने अपनी कल्पनाओं को विस्तार दिया और जो कुछ दिल में आता वो सब अपनी पोस्ट पर उड़ेल देती।

एक दिन एक ग्रुप में कमेन्ट के दौरान एक तीखी सी नोंक-झोंक करते हुए वह रोहित से मिली। उसने प्रोफाइल फोटो न होने पर रश्मि की पहचान पर सवाल उठाया था। रश्मि ने कहा कि उसे नही पसंद कि फोटो लगाए, उसने यहाँ तक भी कहा कि उसकी शक्ल बहुत बेकार है।

इस तरह पोस्ट और कमेन्ट के जरिए उनकी बातें होने लगीं। रश्मि ने कभी भी ये ज़ाहिर नही किया कि वह शादीशुदा है क्योंकि फिर पति और ससुराल का भी ज़िक्र आता। इसलिए उसने खुद को 'सिंगल' बताया। अब रश्मि का खाली समय उसकी पोस्ट पर ही बीतता था।

एक दिन जब हिम्मत करके रश्मि ने अपनी शादीशुदा जिंदगी की हकीकत रोहित को बताई तो उसने कहा- "रश्मि! एक चिड़िया का बच्चा भी जब उड़ने लायक हो जाता है तो वह खुद अपना दाना ढूँढने निकल पड़ता है। तुम कब तक अपने पिंजरे में रहोगी? पंखों को काटने से तुम्हारी उड़ने की क्षमता कम नही होगी। उड़ो ताकि तुम्हें देखकर और भी लोग उड़ सकें। अपने लिए रास्ता तुम्हें खुद बनाना होगा।"

रात-भर वह रोहित की बातें सोचती रही और करवटें बदलती रही। सुबह उसकी आँख देर से खुली। नहाने के बात खुद को आईने में ध्यान से देखा तो उसके चेहरे पर एक चमक आ गई।

उसने बाल संवारे, हलकी सी लिपस्टिक लगाई और माथे पर छोटी सी बिंदिया। बेड पर पड़े फ़ोन को उठाया और कैमरा ऑन किया। एक फ़ोटो खींची। फ़ोटो में खुद को देखकर मुस्कुरा दी। फेसबुक लॉग इन किया और प्रोफाइल में उस फोटो को अपलोड कर दिया।

थोड़ी देर बाद उसने रोहित का मेसेज देखा, रोहित ने लिखा था- 'चिड़िया ने अपने पंख फैला दिए' बधाई हो! मैंने कहा था न कि तुम्हारी हँसी बिलकुल उस छोटी बच्ची की तरह है!!!

रश्मि मुस्कुरा उठी ... उसने अपना मोबाइल नंबर रोहित को मेसेज में भेजा।

पाँच मिनट के बाद फ़ोन की घंटी बजी तो रश्मि ने काँपते हाथों से फ़ोन उठाया और कहा 'हेलो',..... सामने से आवाज़ आई- हेलो!!! मैं रोहित .....!

बेटों को बचाओ

फ़ोन बंद करके सुमन निढाल होकर बेड पर लेट गई। लेटते ही न जाने कब उसकी आँख लग गई। करीब तीन घंटे बाद जब वह सोकर उठी तो उसे ऐसा लगा जैसे बरसों के बाद सुकून की नींद सोई हो। मुँह धोकर अपने लिए एक कप चाय बनाकर वह बालकनी में आ गई।

चाय पीते हुए सामने पार्क में खेलते हुए बच्चों को देखते हुए सोचने लगी कि मोहित भी कितना प्यारा बच्चा था। मोहित... जिसे वह ट्यूशन पढ़ाती थी। कितना मासूम और प्यारा था लेकिन उसका चाचा रोहन ... एकदम उसका उल्टा। चौबीस साल का निर्दयी और नीच लड़का।

उस दिन जब वह ट्यूशन के बाद मोहित को उसके घर छोड़ने गई क्योंकि उसकी माँ बीमार थी, तब वापसी में रोहन ने उसे कार से घर छोड़ने के लिए कहा। वह बैठ गई क्योंकि वह "मोहित" का चाचा था। लेकिन उसे नही मालूम था कि वह उसके साथ....
सुमन कार की खिडकियों के शीशे को अपने हाथों से पीटती रही लेकिन .....

घर आकर जब उसने अपने मम्मी-पापा को सब बताया तो वे उसे तुरंत पुलिस स्टेशन ले गए जहाँ एक बार फिर उसकी इज्ज़त सवाल-जवाब से उतारी गई। रोहन के घरवालों के लिए तो वह मोहित से भी ज़्यादा मासूम था। उनके अनुसार इतना भोला लड़का रेप कर ही नहीं सकता .. ज़रूर सुमन के चरित्र में ही खोट है लेकिन शुक्र है मेडिकल रिपोर्ट का जिसकी वजह से उसे अरेस्ट होना ही पड़ा, तब भी उसके घरवालों ने कहा- "जवान लड़का है, गलती हो गई। कुछ ले-देकर मामला ख़त्म करो।"

लेकिन सुमन को ये मंज़ूर नहीं था। वह एक साल से कोर्ट के चक्कर काट रही है। ऊँचे लोगों की पहुँच से चार दिन पहले ही रोहन ज़मानत पर घर आया था। आज ही सुमन की दोस्त ने उसे फ़ोन करके बताया कि रोहन हॉस्पिटल में ज़ख़्मी हालत में पड़ा है।

पता नहीं क्यों ये सुनकर बहुत समय बाद आज सुमन को चैन की नींद आई थी।

चाय ख़त्म करके वह उठी और तैयार होकर सिटी हॉस्पिटल के लिए निकल पड़ी।

वहाँ पहुंचकर उसने देखा कि वही पुलिस इंस्पेक्टर जिसने उसके रेप की एँफ़० आई० आर० लिखी थी, वह रोहन के पापा से बात कर रहा था। नर्स से पता चला कि रोहन को कुछ हिजड़ों ने अगवा कर कुछ **गे** लोगों को बेच दिया था। कल बड़ी बुरी हालात में रोड पर मिला था।

उसके घरवाले अभी भी सदमे में हैं कि उनके बेटे के साथ कैसे कोई रेप कर सकता है क्योंकि **"रेप तो केवल लड़कियों का होता है"**। सुमन के चेहरे पर एक फीकी सी मुस्कान आई। वह रोहन के रूम में गई। वह पेट के बल लेटा हुआ था क्योंकि पीछे कमर के नीचे का हिस्सा ज़ख़्मी हो गया था। तभी कमरे में रोहन के मम्मी-पापा और इंस्पेक्टर आ गए। सुमन को देखकर सब चौंक गए। सुमन ने बड़ी विनम्रता से कहा- "लड़कों से गलतियाँ हो जाती हैं, जाने दीजिए और कुछ ले-देकर मामला रफ़ा दफ़ा करके अपनी इज्ज़त बचाइए।" और तेज़ क़दमों से बाहर निकल गई।

देसी घी का लड्डू

संध्या के घर सुबह से ही शोर-शराबा हो रहा है, आखिर हो भी क्यों न ? उसे देखने एक 'एन आर आई.' लड़का जो आ रहा था। अमेरिका में टैक्सी चलाता है, डॉलर में कमाता है। पूरे घर को जैसे मन की मुराद मिल गई। अडोस-पड़ोस में ख़बरें भिजवाई जा रही थीं ताकि रुतबा बढ़ सके। चंडीगढ़ वाली चाची ने थोडा मुँह बनाते हुए पूछा- "लड़का खाता-पीता तो नहीं है ? आखिर इतनी दूर से यहाँ बहू लेने क्यों आएगा ? अब तो सब मॉडर्न हो गए हैं, मॉडर्न बहू ही ढूँढ लेते हैं विलायत में।

संध्या की माँ ने मुँह बनाते हुए कहा- "उन्हें संस्कारी बहू चाहिए इसलिए आया है।" हमारी संध्या की फोटो एक बार में ही पसंद कर ली थी उसने। उधर संध्या परेशान थी क्योंकि उसका प्रेमी देवदास बना हुआ था। नौकरी न लगने के कारण संध्या उसे किसी से मिला भी नही पा रही थी। इस प्रेमी से पहले भी उसके तीन-चार छोटे-मोटे नाकाम और सच्चे वाले इश्क हुए थे। संध्या बहुत बड़े द्वंद्व में थी कि क्या करे ? अमेरिका वाला पलड़ा भारी लग रहा था उसे। तभी दादी ने बताया कि लड़के वाले आ गए। खूब आवभगत की गई। कुछ भी करके रिश्ता हाथ से नहीं जाने देना था। नाश्ते पानी के बाद संध्या की माँ ने कहा लड़के-लड़की को आपस में बात कर लेनी चाहिए तो लड़के की माँ ने कहा- "जी, बात क्या करनी? हमें संध्या पसंद है।

संध्या के घरवाले ख़ुशी से नाचने लगे तभी लड़के ने बाप ने कहा- "शादी दस दिन में ही करनी है। संध्या के भाई ने कहा- जी सब हो जाएगा। संध्या की माँ ने जैसे ही बर्फी उठाई मुँह मीठा कराने के लिए लड़के की माँ ने कहा-"हम चाहते हैं कि हमारे बेटे के साथ, हमारी बड़ी बेटी की भी शादी आपके बेटे से हो जाए। आपकी बेटी हमारे घर और हमारी आपके। बेटी साथ ही आई है, होटल में रुकी है। थोड़ी अपसेट है क्योंकि कुछ दिन पहले ही उसका ब्रेकअप हुआ है।

संध्या के घरवाले एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। संध्या की दादी ने उसकी माँ को अन्दर कमरे में चलने का इशारा किया। जैसे ही दोनों कमरे में पहुँची, दादी ने गुस्से में कहा- ये क्या लेंन-देन कर रहे हैं ये लोग? चंडीगढ़ वाली चाची भी आ गई और बोली-मेरी मानो तो ये रिश्ता मत करो। अरे! पता नही लड़की ने कहा-कहाँ मुँह मारा होगा। हमें तो एकदम सती-सावित्री बहू चाहिए। दादी भी चाची की हाँ में हाँ मिलते हुए बोली- हाँ बिलकुल। ये विलायती लडकियाँ बहुत तेज़ और चरित्र की गिरी हुई होती हैं। जा कर दे मना उन्हें। संध्या की माँ बोली- लेकिन माँ जी सोचो 'एन आर आई.' हैं वो लोग। संध्या वहाँ गई तो अपना बेटा भी वहाँ सेटल और फिर हम सब भी अमरीका जाएँगे। दादी बोली- लेकिन लड़की का चरितर ?

इसपर संध्या की माँ ने कहा- देसी घी का लड्डू थोडा टेढ़ा भी हो तो चलेगा फिर हमारी संध्या कौन-सी दूध की धुली है। दादी ने कहा-हाँ बात तो सही है और सब ठहाका मार कर हँसने लगे।

मोहे गोरा रंग दे दे

अरे वाह! लक्ष्मी आई है! बधाई हो! सरला जी. गुप्ता आंटी की आवाज़ आई। तभी ताई सास बोलीं- हाँ! लक्ष्मी ही है, वैसे माँगा तो 'कुबेर' था पर कोई बात नहीं दूसरा बच्चा लड़का ही होगा। गौरी की सास ने सुर में सुर मिलते हुए कहा- और नहीं तो क्या .. चाहे एक ही होता लेकिन लड़का होता तो चल जाता लेकिन दो-दो लक्ष्मी नही चलेगी.. सुन गौरी अगला बच्चा बेटा ही चाहिए.. हाँ नहीं तो.. और हँसने लगी।

अभी बिटिया दो महीने की ही हुई है और सबको दूसरे बच्चे की पड़ी है.. गौरी मन ही मन सोच रही थी कि तभी उसकी ननद पुष्पा कमरे में आई जो आठवें महीने से थी। उसने कहा- शुक्र करो कि बेटी गोरी-चिट्टी है, कहीं अपनी माँ पर जाती तो... और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। सास तपाक से बोली- वो तो मेरा बेटा 'अजय' इतना गोरा जो है तभी बेटी भी गोरी पैदा हुई वरना तो ... ननद बोली और नहीं तो क्या .. एक तो लड़की उसपर काली... समझो माँ-बाप की ज़िन्दगी पर उम्र भर के लिए ग्रहण ही लग गया। ताई सास भी हँसते हुए बोली- और नही तो क्या.. और मज़े की बात ये कि बहू के माँ-बाप ने नाम भी रखा गौरी.. हाहाहा अरे! काली लड़की का नाम गोरी.... और कमरे में ठहाके गूंजने लगे।

सास ननद की नज़र उतारते हुए बोली- मेरी बेटी तो परी है परी, गोरी-चिट्टी और दामाद भी सुंदर। देखना इनका राजकुमार एकदम हीरो जैसा होगा। थोड़ी देर में तीनों कमरे से बाहर चले गए।

गौरी अंदर से तड़प उठी और अपने माँ-बाप को कोसने लगी कि उन्होंने क्यों गौरी नाम रखा क्योंकि बचपन से ये ताना सुनती आई थी। एक बार माँ से पूछा भी था उसने कि ये नाम क्यों रखा सब चिढाते हैं तो माँ ने बलैयाँ लेते हुए कहा था- बिटिया ये तो माता गौरी का नाम है शिव की पत्नी का। शिवजी, कृष्ण और भगवान राम भी तो काले थे। लेकिन माँ ये सब तो देव हैं, पुरुष हैं कोई भी देवी काले रंग की नहीं सब कितनी गोरी और सुंदर हैं. गौरी ने रुआंसे होते हुए कहा था। तब माँ ने कहा- काली माता तो एकदम काली हैं, तो गौरी बोली- वो भयानक भी तो हैं इसीलिए लोग उनसे डरते हैं। मैं नही चाहती कि लोग मुझसे डरें और दूर भागें। माँ ने गौरी को गले लगा लिया और कहा- तू! लोगों की बात का बुरा मत माना कर। बिटिया, वो तन से गोरे लेकिन मन से काले लोग हैं और तू ? तन से काली लेकिन मन से उजली है।

काले रंग के कारण शादी में भी बहुत दिक्कतें आईं। अजय से शादी हुई क्योंकि उम्र का फासला ज़्यादा था। अब कहीं तो समझौता करना ही था लेकिन अजय उसे बहुत प्यार करते थे। उसका बहुत ध्यान रखते थे। सास ननद के तानों के बीच पति का प्यार ही उसे संबल देता था।

कुछ दिन के बाद खबर आई कि ननद को बेटी हुई है। सास के साथ गौरी भी ननद से मिलने गई। बच्ची को आशीर्वाद देकर हटी ही थी कि कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी।

एक औरत कह रही थी कि- देखो बेटी का रंग कितना दबा हुआ है जबकि माँ-बाप तो गोरे-चिट्टे हैं। गौरी से रुका नहीं गया। वह एकदम बोल पड़ी- "आप लोग रंग-रूप से बाहर निकलेंगे या नहीं ? अभी तो वह छोटी-सी बच्ची है, बड़ी होते-होते उसके रूप रंग में बहुत बदलाव आएँगे और आप लोग अभी से उसमे कमियाँ निकालने लगे। वैसे भी इंसान अपने अन्दर की खूबियों से पहचाना जाता है।

आप लोगों के ताने उसे अपनी खूबियों से भी दूर रखेंगे। वह ज़िन्दगी भर अपने अंदर दोष ही ढूंढेगी।" बोलते-बोलते उसका गला रुंध गया और ननद की तरफ़ देखने लगी जिसकी आँखों में आँसुओं के साथ उसके लिए धन्यवाद भी था।

अहसास के मोती

स्वरा जैसे ही स्टाफ रूम में आई, कॉफ़ी मशीन की ओर लपकी, एक स्ट्रोंग कॉफ़ी बनाई और कुर्सी पर आकर इत्मीनान से बैठ गई। शिल्पा मेम ने पूछा- क्या बात है बहुत थकी-थकी सी लग रही हो ?

तो स्वरा ने बताया- आज सारे पीरियड्स लगे थे। एक मिनट भी आराम नहीं मिला। कमर और पैर टूट रहे हैं। शिल्पा मेम ने कहा- हाँ यार.. मैं भी एडमिशन का काम देख रही हूँ। सभी एडमिशन फॉर्म की एंट्री डिपार्टमेंट की वेबसाईट पर कम्पलीट करनी हैं। सुबह से लगी हूँ, बस दो फॉर्म और बाकि हैं। अब हिम्मत नही है। स्वरा ने कहा- कोई बात नहीं आप रेस्ट करो, कॉफ़ी पीकर मैं फ्रेश हो गई हूँ, बाकि की एंट्री मैं कर देती हूँ फिर साथ घर चलेंगे। शिल्पा मेम ने खुश होकर थैंक्स कहा और कुर्सी पर निढाल होकर बैठ गईं। स्वरा ने दोनों फॉर्म उठाए और एंट्री करने लगी। पहला फॉर्म एक लड़के का ग्यारहवीं क्लास के लिए साइंस विभाग के लिए था। उस पर पिता का नाम “श्री विकास शर्मा” था। फोटो पर नज़र पड़ते ही स्वरा की उँगलियाँ कीबोर्ड पर रूक गईं। उसने मन ही मन कहा ‘विकास’. फिर बच्चे का नाम पढ़ा ‘चिरायु’.. एक पल को वह जड़वत हो गई। चिरायु इतना बड़ा हो गया.. और उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे। शिल्पा मेम ने देखा तो तुरंत आईं और पूछा- क्या हुआ ? रो क्यों रही हो? स्कूल में शिल्पा मेम ही थीं जो स्वरा के थोडा-बहुत करीब थीं। स्वरा ने आँसूं पोंछते हुए फॉर्म दिखाते हुए कहा- “मेम ये मेरे पति और मेरा बेटा चिरायु” ..

क्या? शिल्पा मेम आश्चर्य से बोलीं . लेकिन तुम तो सिंगल.. तुमने बताया था कि तुमने शादी न करने का फैसला लिया हैं .. फिर ये सब?

स्वरा ने भीगी पलकें लिए शिल्पा मेम की तरफ देखा और बताया- शिल्पा मेम बारह साल पहले मेरी मर्ज़ी से मेरा तलाक हो गया था। चार साल के बेटे को छोड़कर मैं दिल्ली आ गई थी। कोर्ट ने तो कहा था कि मैं महीने में एक बार अपने बेटे से मिल सकती हूँ लेकिन मैं नहीं मिली क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि मेरे बेटे को मेरा आधा-अधूरा प्यार मिले। इससे अच्छा तो वह मुझे गलत समझे या मरा हुआ समझ ले और विकास की दूसरी पत्नी को माँ के रूप में अपना ले। इतना कहकर स्वरा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। शिल्पा मेम ने उसे गले से लगाकर सांत्वना दी।

सॉरी! लेकिन तुम्हारा डाइवोर्स क्यों हुआ? शिल्पा मेम ने पूछा।

उनका किसी के साथ .... इतना कहकर स्वरा फिर रोने लगी।

शिल्पा मेम ने उसे चुप कराते हुए उससे पूछा- अच्छा! माँ के नाम वाले कॉलम में क्या नाम है ? स्वरा एकदम होश में आई और कहा- वो तो नहीं देखा।

शिल्पा ने जल्दी से फॉर्म उठाया और पढ़ने लगी। ओह! स्वरा माँ के नाम का कॉलम तो खाली हैं .. मतलब तुम्हारे पति ने दूसरी शादी नहीं की ...
ये सुनते ही स्वरा ने शिल्पा मेम के हाथ से फॉर्म लिया और पढ़ते हुए बुदबुदाने लगी- लेकिन उनका तो वसुधा के साथ!!!.... और सिर पकड़कर बैठ गई।

शिल्पा मेम ने कहा- कहीं तुमने किसी ग़लतफ़हमी में आकर तो तलाक नही ले लिया?

स्वरा को कुछ समझ नहीं आया, उसने अपना बैग उठाया और घर के लिए चल पड़ी।

वह उन सभी अहसासों को समेटते हुए जा रही थी जो उसके सीप जैसे दिल में बारह सालों में मोती बन चुके थे।

एक हफ़्ते बाद नया सेशन शुरू हुआ। उसी दिन नए एडमिशन लिए बच्चों की पी.टी.एम थी। स्वरा ग्यारहवीं क्लास के विज्ञान विभाग में गई। उसकी निगाहें बेसब्री से चिरायु को ढूँढ रही थीं।

पेरेंट्स की भीड़ में भी उसने विकास को पहचान लिया। धड़कते दिल से वह विकास के पास गई और हेलो कहा। विकास उसे देखते ही खड़े हो गए और कहा- स्वरा तुम?

दोनों एक दूसरे को देखे जा रहे थे और साथ खड़ा चिरायु उन दोनों को।

फिर विकास ने चिरायु की ओर देखकर कहा- “बेटा! ये तुम्हारी मम्मी” ... आगे वह कुछ बोल नहीं सके तो चिरायु ने कहा- “पापा मैं देखते ही पहचान गया था।”

चिरायु ने आगे बढ़कर स्वरा के पैर छुए तो उसने कसकर उसे गले लगा लिया और बारह बरसों से रुका आँसुओं का सैलाब बह निकला।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - प्रिया एस. प्रसाद (प्रियायश)
जन्म - 21 नवम्बर 1971
शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), बी.एड.
पता - फ्लैट नं.59, डी.डी.एम.आई.जी., पॉकेट 6,
सेक्टर 12, द्वारका, नई दिल्ली - 110078
विधा - कहानी, कविता आदि।
पसंद - संगीत, लेखन एवं पाठन
ई मेल - priyasprasad21@gmail.com
सम्मान - रचनात्मक लेखन कौशल के लिए 'हिन्दी विकास मंच' द्वारा सम्मानित

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-62-8

मूल्य- 40/-